सृष्टि का सृष्टा कौन ?

एम० एस० नदवी
(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

प्रकाशक
मकतबः पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-२० (यू०पी०) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	सृष्टि का सृष्टा कौन?
लेखक-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी	छठा संस्करण
पुस्तक संख्या	5000
वर्ष	2021 ई०
मूल्य	15 रू०
कम्पोज़िंग	इरफ़ान अहमद
प्रकाशक-	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया
पृष्ठ-	32
Book Name-	**Srishti ka Srishta Kaun?**
Writer-	**Mufti Mohd Sarwar Farooqui Nadwi**
Publisher-	**Maktaba Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India**
Website-	**www.islamicjpamn.com**
Mobile-	**0091– 9919042879, 9984490150**
E–Mail :	**jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522–2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522–2741539)
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, (कानपुर) (9935044343)
5. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, (लखनऊ) (9198621671)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
प्रस्तावना	5
परमेश्वर की कल्पना	6
आवश्यकताओं की पूर्ति	6
आवश्यकतानुसार प्रयोग	6
वस्तुएँ और उसका उपयोग	7
सोचने की क्षमता	7
एक महत्वपूर्ण प्रश्न	7
दुनिया का शासक	8
वैज्ञानिकों के निष्कर्ष	8
अनोखा निष्कर्ष	8
किसी के होने का प्रमाण	9
लकड़ी से बनी हुई वस्तु	10
बनाने वाले के गुण	10
खाने के विभिन्न गुण क्यों?	11
पेट में बच्चे का बनना	11
अण्डे के अन्दर बाल और पंख	11
बीज से लकड़ी और पत्ते	12
रोज़ी-रोटी देने वाला	12
रोज़ी की गारन्टी	13
रक्षक	13
शरीर में साँस लेने का इन्तिज़ाम	13
माँ की ममता	14
शरीर से बाल और रौशनी	14
ऊपर वाले की इच्छा	15
माँ के पेट के अन्दर क्या था	15
चेहरे की बनावट	15
नाक की बनावट	16
दाँतों की बनावट	17
राह समझाने वाला	17

विषय	पृष्ठ सं०
शरीर में तार का इन्तिज़ाम	17
खाना एक परिणाम अलग कैसे	18
वही अकेला (परमेश्वर)	18
उसका कोई साझीदार नहीं	19
हर चीज़ की ख़बर	19
समुद्र की मछलियाँ	20
चट्टानों में चीटियों के अण्डे	20
मीठा और नमकीन पानी	20
बीज का ज्ञान	21
पौधे के पत्ते और तने	21
परमेश्वर का चमत्कार	22
आम के पेड़ से आम ही क्यों	22
अन्तर क्यों	23
फलों के स्वाद अलग-अलग कैसे	23
हवा का सन्तुलन	23
सूरज का तापमान	24
बादलों का इन्तिज़ाम	24
ज़मीन से पानी	25
धरती से अनाज	25
ज़ालिम को सज़ा	28
नज़र न आने वाली चीज़ों का इन्कार	29
भरोसा	29
ज़रूरतों को पूरी करने की शर्त लगाना	29
अ़क़्ल व तसव्वुर	30
कल्पना की ताक़त	30
ऊपर वाले (अल्लाह) के गुण	31

प्रस्तावना

यदि यह बात सिद्ध हो जाये कि परमेश्वर के बिना ब्रह्माण्ड की कल्पना नहीं की जा सकती, न उसे स्वीकार किये बिना इंसानी आवश्यकता को समझा जा सकता है तो यह बात बहुत बड़ी शंका को दूर करने के लिये काफी होगी।

इसी प्रकार यदि परमेश्वर को मान कर इन्सानी व्यवस्थाएँ हल हो जाती हों और परमेश्वर का इन्कार करने पर बुरी तरह उलझ जाती हों तो यह इस बात का प्रमाण है कि ऊपर वाला है, जो हर सोचने वाले को विचार करने पर उभारता है। मनुष्य जब पालनहार के चमत्कारों को हर तरफ देखता है तो उसका दिमाग यह सोचने लगता है कि यह सब किसने और किस के लिए पैदा किया है।

इन्हीं विषयों के उत्तर के लिए यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें ऊपर वाले की महिमाओं का उल्लेख है। जिस से इन्सान अपने पैदा करने वाले मालिक को पहचान कर उस के आदेशों का अनुसरण करे और जिस के जो अधिकार हैं उसको अदा करे, ताकि दुनिया और मरने के बाद का जीवन सुखद और सुखमय हो। अन्त में हम सभी सहयोगियों के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने किसी भी प्रकार से सहयोग किया और हिम्मत दिलाई। अल्लाह तआ़ला उन्हें अपनी शान के अनुसार अज्र अ़ता फ़रमाए। आशा है कि पाठकगण ऊपर वाले पर आस्था रखते हुए उसके आदेशों का पालन करेंगे, जिस से विश्व शाँति में शाँति स्थापित होगी और लोक परलोक कल्याण का जीवन कल्याणकारी होगा।

आपका शुभ चिन्तक

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ
02-09-2019

परमेश्वर की कल्पना

परमेश्वर ने सृष्टि को ऐसी बनाई है, जहाँ हर चीज़ के पलने बढ़ने का पूरा इन्तिज़ाम है। पैदाइश से लेकर मौत तक इन्सान यहाँ की बहुत सी चीज़ों को अपनी ज़िन्दगी के पलने बढ़ने के लिए प्रयोग करता है जो इस दुनिया में मौजूद है।

बीज डालने के बाद जब अंखुवा ज़मीन से सर निकालता है तो उसके लिए हवा, पानी, सूरज जो उसकी ज़िन्दगी और उसकी ज़रूरतों के लिए अनिवार्य है काम करने लगते है।

केवल यही नहीं बल्कि मनुष्य के जीवन की समस्त आवश्यक सामग्री भी पूरी तरह मौजूद होती है। ज्ञान विज्ञान की तरक्की के साथ इन्सानी ज़रुरियात जितनी बढ़ती जाती हैं नये-नये अविष्कार इन्सान पर खुलते जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि ऊपर वाले ने इसी वक्त के लिये छुपा रखे थे कि जब इन्सान को इनकी ज़रुरत पेश आएगी तब वह लाभ उठा लेगा और न जाने कितनी वस्तुएँ हैं जो सृष्टि में इन्सान के पलने के लिए सुरक्षित रखी हैं, जिनका किसी को ज्ञान भी नहीं।

आवश्यकताओं की पूर्ति

पेड़ पौधे, जीव-जन्तु और मनुष्यों की आवश्यकता को पूरा करने का यह काम केवल ज़मीन से सम्बन्धित नहीं है। ज़मीन, समुद्र, हवा, सूरज, चाँद और बीच की दूसरी बहुत सी वस्तुएँ मिल कर यह कार्य कर रही है तब कहीं उन को पूरा सामान पहुँचता है। ज़मीन से आवश्यक पदार्थ, वायुमण्डल से हवा, सूरज से गर्मी, चाँद से ठण्डक, ओस से तरावट, मानसून और इसी तरह के दूसरे पदार्थ जमा हो कर काम करते हैं तब गेहूँ का एक पौधा जमीन में कदम जमा पाता है।

आवश्यकतानुसार प्रयोग

ऊपर वाले का यही एक प्रयोग नहीं है। उस का एक महत्वपूर्ण गुण यह है

कि हर चीज़ को उसके आवश्यकतानुसार शरीर मिला है जो उसकी आवश्यकता के लिए सबसे ज़यादा बेहतर है और जिसके ज़रिये ज़मीन में फैले हुए पदार्थों से पूरी तरह लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सबसे बेहतर शरीर मनुष्य को मिला है जो उसकी आवश्यकता के अनुरूप है। उसे प्रकृति की तरफ से ऐसा दिमाग़ मिला है जिसकी विशेषताओं का कोई ठिकाना नहीं और उसके ज़रिये वह ज़मीन और हवा से लाभ उठाने की बेहतरीन क्षमता रखता है।

वस्तुएँ और उसका उपयोग

यदि आप के इर्द-गिर्द हवा मौजूद होती, मगर आपके शरीर में हवा की आवश्यकता न होती तो हवा का होना, न होना आपके लिए बराबर था। ज़मीन जीवन सामग्री भोजन और लज़ीज़ फलों से भरी होती मगर आपके पास खाने के लिए मुँह और हज़म करने वाला शरीर और दूसरे अंग न होते, तो भोजन और फल मौजूद होते हुए भी आपके लिए बेकार थे।

सोचने की क्षमता

अगर आपके पास दिमाग़ न होता तो दुनिया में होते हुए भी आप दुनिया से अलग होते। दुनिया आपके लिए अंधेरी मालूम होती और आपके लिये जीना असम्भव हो जाता। अगर सोचने की क्षमता न होती तो आप अनुभव करते और तुरन्त भूल जाते और अगर कुछ याद भी रह जाता तो उससे नतीजा न निकाल पाते, तो ज़रा सोचिए ज़िन्दगी कितनी कठिन होती!

एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न

सवाल यह है कि क्या यह सब संयोग से अपने आप हो रहा है? क्या चीज़ों के पूरा करने का काम केवल संयोग से हो रहा है? क्या दुनिया की यह ताक़तें केवल अपने आप, आपसी सहयोग पर तैयार हो गई हैं और अपने आप ही से उनका सहयोग हो गया है? तो क्या हर-हर चीज़ को केवल अपने आप ऐसा शरीर मिल गया है जो उस के लिए ज़रूरी है और क्या यह सब कुछ लाखों करोड़ों साल से केवल संयोग से हो रहा है और भविष्य में न जाने कब तक चलता रहेगा,

ज़रूर यह किसी के द्वारा ही चलाया जा रहा है।

दुनिया का शासक

दुनिया का कोई शासक ऐसा नहीं, जो इतनी क्षमता रखता हो कि सारे संसार की आवश्यकता पूरी कर सके। अगर नहीं और यक़ीनन नहीं तो आप को एक ऐसी हस्ती का वजूद स्वीकार करना पड़ेगा जिसे ब्रह्माण्ड की वर्तमान और भविष्य की तमाम चीज़ों और उन की ज़रूरतों का पूरा ज्ञान हो, जो अपनी बेपनाह कुद्रत (सामर्थ्य) से तमाम ज़रूरतों को पूरा कर सकता हो, साथ ही वह मेहरबान और पालनहार भी हो कि अपनी दया से अपनी बनाई हुई चीजों की आवश्यकताएँ पूरी करना जानता हो। ऐसी ही हस्ती का नाम अल्लाह (परमेश्वर) है।

ब्रह्माण्ड का यह बेमिसाल शासन एक सर्वशक्तिमान की शक्ति का प्रदर्शन है और इस बह्म्माण्ड का वजूद एक सर्वोच्च शासक की कारीगरी है और इस बह्म्माण्ड में केवल यही नहीं कि हर चीज़ का एक उद्देश्य है बल्कि इस उद्देश्य के पीछे मालिक की अपनी पैदा की हुई विशेषताओं के साथ मुहब्बत व हमदर्दी भी पूरी तरह समर्पित दिखाई देती है।

वैज्ञानिकों के निष्कर्ष-

यदि यह ग्रह ज़मीन, चाँद जैसा छोटा होता तो इसमें पानी और हवा का अस्तित्व सम्भव न रहता। इसमें तापमान चढ़ता तो अन्तिम सीमा तक पहुँचता और गिरता तो अन्तिम सीमा तक गिर जाता। इसके विरुद्ध अगर ग्रह ज़मीन से दोगुना होते तो हवा ख़तरनाक हद तक घट जाती और उसके दबाव से जीवन तबाह हो जाता।

बहुत थोड़े ऐसे क्षेत्र बाक़ी रह जाते जहाँ जिन्दगी और आबादी सम्भव हो सकती। एक भूभाग से दूसरे भूभाग में आना जाना न केवल मुश्किल बल्कि लगभग असम्भव सा हो जाता, ज़मीन का मौजूदा रूप, इस की सूरज से मौजूदा दूरी, इसके बाकी रहने का परिणाम है इसी कारण इस ज़मीन पर जीना सम्भव है ।

अनोखा निष्कर्ष-

"बहुत से वैज्ञानिकों ने पानी की विशिष्ट विशेषताओं पर रिसर्च किया और

इन चमत्कारों के विषय में बहुत सी बातें गढ़ी है, लेकिन यह हक़ीक़त अपनी जगह अटल है कि बुद्धि लड़ा कर हम चाहे इस बात को जान लें कि *यह सब कुछ किस तरह होता है* लेकिन यह बताना हमारे बस से बाहर है कि *यह सब क्यों हो रहा है।*

फिर ध्यान में रखिए कि मामला केवल पानी तक ही सीमित नहीं, इस बह्म्माण्ड में और न जाने कितने अनूगिनत पदार्थ हैं जिनकी विशेषता इतनी जटिल है कि इन्सानी दिमाग हैरान रह जाता है।

इस में विशेष बात यह है कि इन्सान, इन्सान बनें, अपने कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों को महसूस करे और ज़िम्मेदारी के साथ ज़िन्दगी के सारे काम अंजाम दे, हर हाल में इंसाफ और हक़ पर क़ायम रहे और हर हाल में इंसाफ और हक़ का साथ दे, सिर्फ जायज़ और सही उद्देश्य को अपनाए और बेइमानी की गन्दगी से अपना चरित्र गन्दा न होने दे, पक्षपात, चापलूसी से परहेज करे, ह़क़ मारने और किसी को तक्लीफ देने और जुल्म करने के पास भी न फटके, नफ़रत से अपने दिल को पाक रखे, इन्सानों से मुह़ब्बत करे और दुःख-दर्द में उनके काम आए।

ऊपर की पंक्तियों पर यदि इन्सान विचार करे तो समझ मे आ जाएगा कि उसका पालनहार कितना महान है, जिस ने तमाम वस्तुओं को पैदा किया।

किसी के होने का प्रमाण

यदि किसी चीज़ का अस्तित्व न हो और कहा जाये कि उस के अन्दर बनाने की योग्यता है, बुद्धि इस बात को स्वीकार ही नहीं कर सकती, कि जिसका कोई वजूद न हो उस के अन्दर किसी चीज़ को बनाने की क्षमता हो, बुद्धि मानने को तैयार नहीं, कि जिस का कोई वजूद ही नहीं तो फिर कैसे वह किसी दूसरे को वजूद दे सकता है?

अगर हम मख्लूक़ात (सृष्टि) पर विचार करें, चाहे उसका सम्बन्ध इन्सानों से हो या जानवरों से, पेड़ पौधों से हो या हवा, बारिश और दिन व रात से। इसी प्रकार सूरज और चाँद, सितारों और नक्षत्रों और तापमान को सोचें दुनिया में हर

समय होने वाली तब्दीलियों पर विचार करें तो अक़्ल का फैसला यही होगा कि यह सब किसी इन्सान की कारीगरी नहीं है, बल्कि एक ऐसे की कुद्रत है जिस ने सब को पैदा किया और उसका एक वजूद है।

कोई चीज़ अगर हमारे सामने बनी हुई सूरत में रखी हो तो उसका हर भाग इस बात का प्रमाण होता है कि बनाने वाला उस पर कुद्रत (सामर्थ्य) रखता था, इसलिए कि यह कैसे हो सकता है कि बनाने वाला कुद्रत (सामर्थ्य) न रखे या उसको बनाने का कोई गुण न हो और वह उसको बना ले यह असम्भव है। जैसे-

लकड़ी से बनी हुई वस्तु-

जैसे लकड़ी से बना हुआ कोई तख़्त हो जिस के बनाने में महारत से काम लिया गया हो, देखते ही उसकी मज़बूती का अन्दाज़ा हो जाता है और यक़ीन हो जाता है कि जिसने इसको बनाया है उसके कुद्रत (सामर्थ्य) में लकड़ी थी और वह अच्छी तरह उसको काटने पर सामर्थ्य रखता था, वह चाहता तो लकड़ी को चिकनी भी कर सकता था, उसके पास औज़ार थे और लकड़ी के टुकड़ों को औज़ार से जैसे चाहता बना सकता था।

तख़्त की कारीगरी (नक़्श व निगारी) के बारे में वह खूब जानकारी रखता था, तभी तो उसने इतना मज़बूत तख़्त बनाया। फिर अगर उस तख़्त के बीच में जहाँ पट्रा लगता है, वहीं लगाया हो तो यह इस बात का पता देता है कि बनाने वाला इस तरह पूरी बारीकी के साथ बनाने पर सामर्थ्य रखता था और वह उस में बहुत माहिर था।

यही बात आप हर बनाई हुई चीज़ में देख लीजिए, आपको बनाने वाले की महारत और उस के गुणों का अन्दाज़ा ही नहीं, बल्कि यक़ीन होगा, इसलिए कि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई बनी हुई चीज़ अच्छी हो और बनाने वाला उस पर सामर्थ्य न रखता हो या कोई ऐसी बात बनाने वाले में न हो जो उसे महारत से बनाने में रुकावट हो, यह समझ में आने वाली बात नहीं।

बनाने वाले के गुण-

इसी तरह हर बनी हुई चीज़ पर यदि आप ग़ौर करें तो उससे उस के बनाने

वाले के गुणों का अन्दाज़ा होता है। यहाँ से यह बात भी मालूम हुई कि सृष्टि पर चिन्तन करने से सृष्टा और उस के गुणों की पहचान होती है।

खाने के गुण विभिन्न क्यों?

जो खाना हम सुबह शाम खाते हैं, उसमें न सुनने की क्षमता है, न देखने की, न बढ़ने की, न हरकत करने की, न वह सांस ले सकता है, न पति-पत्नी के सम्बन्ध क़ायम कर सकता है और न सोने जागने की क्षमता रखता है, लेकिन जब खाना इन्सानी शरीर के अन्दर पहुँच जाता है तो वही खाना जिसके अन्दर यह गुण नहीं थे, वह एक ज़िन्दा शरीर बनकर तमाम गुणों को अन्जाम देता है। जैसे-

देखना पति-पत्नी के सम्बन्ध का बनना सोने और जागने की क्षमता का होना लगभग यही हाल तमाम जानदारों के खाने का होता है।

इसी तरह पानी, मिट्टी और हवा के वह पदार्थ जिन से पेड़-पौधे अपने लिए भोजन प्राप्त करते हैं, उनके अन्दर न बढ़ने की क्षमता है, न फल देने की, न साँस लेने की, लेकिन वही पदार्थ जब पेड़-पौधों में दाखिल होते हैं तो वह ज़िन्दगी में बदल जाते हैं। जो अपने आकर्षण से देखने वाले को ख़ुश कर लेते हैं, इन्सान हो या हैवान या पेड़-पौधे हर एक के जिस्म में हर दिन और हर समय, ज़िन्दगी इस बात की गवाह है कि यह सब उसी ज़िन्दगी बख़्शने वाले मालिक की कुद्रत के वरदान हैं।

पेट में बच्चे का बनना

तमाम जानदारों के पेट में जो बच्चे बनते हैं, उन पर थोड़ी देर के लिए ग़ौर कीजिए तो मालूम होगा कि माँ के पेट के अन्धेरे में ही बच्चे की आँखे बना दी जाती हैं, जबकि आँखे तो रोशनी में देख सकती हैं, माँ के पेट के अन्धेरे में आँखों की क्या ज़रूरत? तो पता चला कि आँखों का बनाने वाला अच्छी तरह जानता है कि यह बच्चे माँ के पेट से निकल कर एक ऐसी दुनिया में जाएँगे जहाँ रोशनी होगी, इसी लिए उसने आँखें दी।

अण्डे के अन्दर बाल और पंख-

इसी तरह पक्षियों की पैदाइश पर ग़ौर कीजिए कि अण्डों के अन्दर ही

उनके बाल व पंख निकलते हैं जबकि अण्डे के अन्दर उन्हें क्या ज़रूरत है?

यह इस बात की निशानी है कि पैदा करने वाला जानता है कि यह माँ के पेट से निकल कर खुली हवाओं में उडेंगे, इसी लिए उसने पैदा होने से पहले ही उन्हें बाल और पंख बना दिये।

बीज से लकड़ी और पत्ते

यही हाल हर मख्लूक़ (सृष्टि) का है, माँ के पेट में उनकी बनावट पर ग़ौर करें तो अन्दाज़ा होगा कि आने वाली ज़िन्दगी में जिन हालात का उसे सामना करना होगा उसी के अनुसार उसे तैयार किया जाता है, यहाँ तक कि पेड़ के बीज को भी ऊपर वाला(अल्लाह तआ़ला) इस तरह तैयार करता है कि उस के एक भाग से तो पत्ते ऊग आते हैं और टहनियाँ निकलती हैं और दूसरा भाग ज़मीन में पानी और मिट्टी के अन्दर अपना काम करता रहता है, अर्थात यह सब उसी मालिक की कुद्रत से होता है जो खूब जानता है कि पेड़-पौधों को पानी, मिट्टी, रोशनी और हवा की ज़रूरत है, यही वजह है कि उसने यह सब इन्तिज़ामात किये, वरना इन इन्तिज़ामात की ज़रूरत ही क्या थी यदि वह इन आगे आने वाले ह़ालात का ज्ञान न रखता।

इसी प्रकार जितने मर्द पैदा हो रहे हैं उनकी संख्या का भी उसी को इल्म है तभी तो उसने उनके लिए उतनी ही संख्या में औरतों का इन्तिज़ाम करके उन्हें इस दुनिया में भेजा, इन्सानों की ज़रूरतों के लिए चीज़ो का इन्तिज़ाम किया। यह भी इस बात का प्रमाण है कि उसी पैदा करने वाले की कारीगरी है जो तमाम बातों का ज्ञान रखता है।

रोज़ी रोटी देने वाला

जब इन्सान माँ के पेट की अन्धेरियों में था, कोई इन्सान पानी, भोजन या किसी और चीज़ से उसकी मदद नहीं कर सकता था, यहाँ तक कि बाप और जिस माँ के पेट में उसका जिस्म तैयार हो रहा था वह भी उसकी मदद नहीं कर सकते थे, लेकिन पालनहार की दया ही तो थी जिसने इसके लिए नाफ़ की नलूकी के ज़रिये ताज़े भोजन का इन्तिज़ाम किया।

जब बच्चा माँ के पेट से निकल कर इस दुनिया में आता है और वह नाफ़ की नलूकी टूट जाती है तो फिर पालनहार ने नवजात शिशु की रोज़ी का इन्तिज़ाम माँ की छाती से किया।

फिर उस बच्चे के दिल में तरीक़ा सुझाया कि वह इस तरह से माँ की छाती से मुँह लगाकर अपने लिए भोजन हासिल करे, जबकि अभी नवजात शिशु में न देखने की क्षमता है न सुनने की क्षमता है और न ही वह अक़्ल व शुऊर का मालिक है (फिर भी वह अपना भोजन हासिल करने के लिए वहीं मुँह लगाता है) ऐसा क्यों?

रोज़ी की गारन्टी

हक़ीक़त में उसी पालनहार ने हर एक की रोज़ी की गारन्टी और ज़मानत ली है। कुछ मछलियों की रोज़ी वह समन्दरों की गहराइयों में देता है, कुछ कीड़ों की रोज़ी का इन्तिज़ाम चट्टानों के बीच में रखता है, माँ के पेट में मौजूद बच्चे की रोज़ी वह पेट की अन्धेरियों में रखता है और छोटे-छोटे पौधों का भोजन बीजों के दर्मियान तैय्यार करता है।

इस तरह जिस को यह यक़ीन होगा कि उसे उस का पैदा करने वाला रोज़ी दे कर रहेगा तो फिर कोई उससे उसकी रोज़ी छीन नहीं सकता और उसे अपने रिज़्क़ के विषय में पालनहार के अलावा किसी से डर महसूस नहीं होगा।

रक्षक

जिस समय माँ के पेट में था उसी ने खत्रात से बचाया, फिर वह खोपड़ी की हड्डियों के मज़बूत पिंजरे में कोमल दिमाग की रक्षा कर रहा है। आँखों की रक्षा के लिए आइब्रो, नाक और (उभरे हुए) गाल का इन्तिज़ाम किया और सीने के पिजरें में दिल और फेफड़ों की रक्षा का सामान किया।

वही ज़िन्दगी की सुरक्षा के लिए खाना, पानी, हवा, रोशनी और गर्मी आदि जीवन सामग्री का इन्तिज़ाम करता है, तो उस के अतिरिक्त कौन है जो सुरक्षा दे सकता हो।

शरीर में साँस लेने का इन्तिज़ाम

उस मालिक ने इन्सान को अपनी नींद या बीमारी में खुद से अपने शरीर

में हवा दाखिल करने या निकालने का ज़िम्मेदार नहीं बनाया। अगर वह इन्सानों को इसका ज़िम्मेदार बनाता तो हवा दाखिल करने और निकालने का काम ही हर समय करता रहता और कोई दूसरा काम इन्सान का न हो पाता, फिर अगर नींद उस पर आ जाती तो हवा रुक जाती और मौत आ जाती, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया बल्कि यह सो जाता है तब भी हवा का काम इसका शरीर करता रहता है।

माँ की ममता

चाहे जानवर हो या इन्सान, माँ की ममता और अपने बच्चे की मुहब्बत पर ग़ौर करने से उसकी क़ुर्बानियों का अन्दाज़ा होता है यहाँ तक कि मुर्ग़ी भी अपने बच्चे की आवाज़ पर घबरा जाती है, उसके बाल खड़े हो जाते हैं और उसके चूज़ों को कोई तक्लीफ़ देना चाहे तो उस पर हमला कर देती है।

हक़ीकत में यह दया किसने रखी जो एक छोटे से पक्षी की सुरक्षा का सामान बन जाता है, यह उसी मालिक के कारीगरी का प्रमाण है जिसे हम रहमान और रहीम (दयालु) या कृपालु के नाम से याद करते हैं।

एक ओर सितारों और ज़मीन से करोड़ों गुना बड़ी सृष्टि की बनावट पर ग़ौर करें, दूसरी ओर पानी के एक बूँद में लाखों और करोड़ों लोगों के भोजन के इन्तिजाम पर ग़ौर करें, फिर अपने दिल से पूछें कि यह तमाम सृष्टि आखिर किस तरह एक बादशाह और एक प्रबन्धक के आगे अपना सर झुकाए हुए हैं?

हमारे दिल का जवाब यही होगा कि यह सब उसी की क़ुदरत है जिसके क़ब्ज़े या सामर्थ्य में सृष्टि की हर वस्तु है।

शरीर से बाल और रोशनी

शरीर पर बाल कैसे उग रहे है और किस तरह खाल से जुड़े हुए हैं? इसी प्रकार आँखों से देखने की रोशनी कैसे निकल रही है, दिमाग़ में विचार के चिराग़ किस ने जलाए? दिल की मशीन कौन चला रहा है? माँ के पेट के अन्धेरे में पालन किसने किया, माँ ने? बाप ने? इन बेचारों को क्या खबर कि बच्चे की पैदाईश कितना बड़ा सम्मान है। फिर इन्सानी सूरत में किसने ढाला?

ऊपर वाले की इच्छा

इन्सान खरगोश या बन्दर क्यों नहीं बना? इन तमाम सवालात का जवाब सिर्फ़ एक है कि यह तमाम चमत्कार ऊपर वाले की इच्छा से हो रहे हैं। वह बहुत बड़ा है, वह जानता है कि अलग-अलग चीज़ों को मिलाकर इन्सान को कैसे बनाना है। वह बेपनाह इल्म का मालिक है, कोई बात समन्दरों की गहराई में हो या धरती के किसी कोने में, उसके ज्ञान से बाहर नहीं रह सकती और यही वजह है कि हर जगह जहाँ कहीं भी जो काम हो रहा है, वह हर प्रकार से सुनिश्चित है, इसलिए कहीं कोई खराबी मौजूद नहीं।

तूफानों और बिजली को रास्ता किस ने बताया, क्या आप बादलों को पुकार सकते हैं कि वह आप पर बारिश बरसाएँ, क्या आप बिजलियों को अपने पास बुला सकते हैं, दिल को समझ आख़िर किसने दिया और हिरन को किसने आज़ादी दी।

माँ के पेट के अन्दर क्या था?

माँ के पेट में इंसान के लिए न ग़ल्ला मौजूद था, न दूध और न फल। एक पाइप के ज़रिये इसे नौ माह तक भोजन पहुँचाया, बाहर आया तो बहुत नाज़ुक था, हाज़मा कमज़ोर था, वह रोटी खाने के लायक न था, उसकी माँ की छातियों में साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ दूध के स्रोत जारी कर दिये। जब दो बरस के बाद दांत निकल आए तो यह स्रोत सूख गये क्या यह सब अपने आप हो गया, सभी को सोचना है।

फिर इन्सान ने कुछ दानें ज़मीन पर बिखेर दिये जिसे ज़मीन ने उन्हें पाधों में बदल दिया, लेकिन गेहूँ की जगह भुट्टा नहीं निकाला,ऐसा क्यों नही किया? इसलिए कि यह उसने अपनी इच्छा से नही किया बल्कि ऊपर वाले ने उसे यही हुक्म दिया है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि वह अपनी मर्जी से जो चाहे करे यह असम्भव है कि गेहूँ से जौ पैदा हो और अंगूर से बादाम।

चेहरे की बनावट

तमाम मख्लूक़ात की शक्लों पर ग़ौर करें, आप देखेंगे कि बनाने वाले ने हर प्राणी को एक ही नमूने पर पैदा किया।

चेहरे पर दो आँखें और दोनों के बीच में एक नाक रखी, दोनों पहलुओं पर

हाथ और नीचे पैर दिये, कभी आप ने यह देखा कि किसी इंसान के घुटने में आँख निकल आई हो या सर से हाथ निकल आया हो? क्या यह बात मालिक की करीगरी का प्रमाण नहीं ?

उसी ज़ात ने इन्सान को ज़बरदस्त हिक्मत से बनाया। इसी तरह हर जानदार को देखिए पेड़-पौधों पर नज़र डालिए तो मालूम होगा कि हर एक को मालिक ने एक शक्ल और एक नमूने पर बनाया।

आखिर इन सूरतों को वजूद में लाने वाला उसके सिवा कौन हो सकता है जो हर समय अपनी सृष्टि की रक्षा करता है।

नाक की बनावट

इन्सान के नाक को कैसे सटीक जगह रख दिया, आँखों के बीच दो सूराखों से हवा अन्दर जाती है, उस मालिक ने उन दोनों सूराखों को नाक से ढांक दिया और नाक के ऊपरी हिस्से में हड्डी बनाई ताकि परदे पर हवा का दबाव न पड़े। यदि ऐसा न होता तो सूराख बन्द हो सकते थे और साँस लेने में तक्लीफ हो जाती।

इसीलिए हड्डी का इन्तिज़ाम किया फिर यह नाक की हड्डी आँखों की हिफाज़त में और हवा को दाखिल करने के लिए लगातार नाक खोलने में भी मददगार है, यदि नाक को पूरी तरह हड्डी ही से मिला दिया गया होता तो फिर हम गन्दगी कैसे निकालते?

मालिक ने एक और इन्तिज़ाम यह किया कि नाक की जो दीवार है उसको नर्म बनाया तकि हवा उस दीवार से टकराये, फिर उसे अन्दुरुनी आड़ से टकराने के लिए छोड़ दे। यह दाखिल होने वाली हवा नाक की दीवार से लगकर जाये ताकि कीटाणु और मिट्टी उससे अलग हो जाये। इस तरह दाखिल होने से पहले ही हवा के साफ होने का कैसा इन्तिज़ाम कर दिया!!

सर्दियों में कुछ लोगों के नाक से खून बहता है जिसके कारण नाक सुर्ख हो जाती है, यह इन्तिज़ाम इसलिए किया गया कि दाखिल होने वाली हवा गर्मी ह़ासिल करके ही अन्दर जाए और जाने से पहले गर्मियों में नाक की यह ज़िम्मेदारी रखी कि वह खुश्क या गर्म हवा को अन्दर जाने से पहले ताज़ा और ठण्ड कर के

अन्दर जाने दे।

क्या यह सब इन्तिज़ामात उस ज्ञानी संरक्षक की कुद्रत के प्रमाण नहीं दे रहें!!

दाँतों की बनावट

ऊपर के जब्ड़े के दाँतों को आखिर कौन बनाता है कि ऊपर का रुख करें? नीचे के जब्ड़े के दाँतों को नीचे जाना कौन सिखाता है? आखिर दाँतों को किस ने बढ़ना सिखाया? आखिर कौन हस्ती है जिसने इन सब अंगो को अपना काम सिखाया? कौन है जिसने वनस्पति, जानवर और इन्सानों के जिस्म के हर अंग को तमाम अंगों के बीच में अपनी जगह पर रहना अंगो के मुक़ाबिले में सटीक मात्रा में बढ़ना सिखाया?

राह समझाने वाला

आँखों की पल्कों पर गौर कीजिए, आँख खुलने पर उस का ऊपरी भाग ऊपर ही की ओर जाता है और पलक का निचला हिस्सा नीचे की ओर जाता है। अगर इसके उल्टा होने लगे यानी ऊपर का भाग नीचे और निचला भाग ऊपर जाने लगे तो फिर आँखों की पुत्ली प्रभावित हो जाएगी। इन्सान हो या हैवान, उनकी पलूकों के हर बाल को किसने बनाया और कौन बराबर राह सुझाता रहता है, वही है जो हक़ीक़त में राह दिखाने वाला है।

शरीर में तार का इन्तिज़ाम

कौन है जिस ने शरीर में एहसास का एक जाल बिछा दिया है, जिस का सेन्टर दिमाग़ है। जैसे ही कोई कीड़ा मकोड़ा, बिच्छू आदि शरीर के किसी भाग पर चढ़ जाता है तो तुरन्त उस एहसास के जरियें दिमाग़ को खबर पहुँचती है और दिमाग़-उसी समय हाथ पैर को हुक्म देता है कि पकड़ो इसे और इन्सान उसे पकड़ कर फेक देता है, इसी तरह जब इन्सान तक्लीफ से थक जाता है तो कौन नींद देकर इसे राहत देता है, इसी प्रकार जब इसके शरीर में गन्दगी जमा हो जाती है तो पसीने और गुर्दों के रास्ते से कौन बाहर करता है। अगर गन्दगी ज़्यादा हुई तो कौन शरीर में बुखार पैदा करके उसे जला डालता है।

खाना एक परिणाम अलग कैसे

घर के तमाम लोगों के ज़रिए खाये जाने वाले एक ही भोजन पर ग़ौर करें तो नज़र आएगा कि वही खाना मर्द के शरीर में मर्द के रूप में बनता है। औरत के शरीर में औरत और बच्चे के शरीर में बच्चे के रुप में। यदि बिल्ली इसे चट कर जाए तो बिल्ली के रूप में, चूहे के खाने पर चूहे के रुप में और यदि कुत्ता यही खाना खाता है तो कुत्ते के रुप में तब्दील हो जाता है। हालाँकि खाना एक है जिसे घर के तमाम लोगों ने खाया, कुत्ते, चूहे और बिल्ली ने खाया, लेकिन अलग अलग रूपों में तब्दील होता गया, ऐसा किस ने किया?

वही अकेला (परमेश्वर)

शरीर में एक महत्त्वपूर्ण चीज़ दिल भी है जो तमाम जज़्बात का स्रोत है। जिसमें मुहब्बत, दया हमदर्दी और बहुत से गुण जन्म लेते हैं। जब दिल रूपी जमीन वीरान हो जाती है, तो कौन हसीन घटाएँ बरसा कर दिल की बस्ती को जिंदगी देता है। अगर ऊपर वाले को स्वीकार किया और उसके इशारे को समझा तो यह इन्सान एक दिन उसके पास इनूआम का हक़्दार होगा।

ऊपर वाले की कृपा और देन का कोई किनारा नहीं, यह सूरज और असंख्य जीवों के पैदा करने वाले को इन्सान कैसे भूल सकता है कि इतना बड़ा मालिक होने के बावजूद एक छोटे से हक़ीर कीड़े पर इतना मेहरबान है कि उसका जीवन चला रहा है, उसे हर प्रकार के खतरों से बचा रहा है, उसके लिए मुर्दा ज़मीन पर घटायें बरसा रहा है।

इसी प्रकार इस इस इन्सान के बर्बाद आंगन को वही है जो बहार से सजा रहा है और इसकी सूनी फिज़ाओं को वह दयावान की तरह सदा साया करता है, यह जब चल रहा होता है तो इसके क़दमों की चाप बहुत क़रीब से सुनायी देती है। यह जब नज़र उठाता है तो बिजलियाँ फिज़ाओं में नज़र आती हैं। ऐ महान दयावान परमेश्वर! इन सब बातों से यह हकीकूत सामने आ गई कि इन तमाम कामों की निगरानी उसी के अधीन हो रही हैं।

उसका कोई साझीदार नहीं

ब्रह्माण्ड का कण-कण गवाही देता है कि उस अकेले की कारीगरी से ही यह सब कुछ हो रहा है जिसे हम अपनी आँखों से देखते रहते है। डाक्टरों के कहने के अनुसार इन्सान को हवा की और सांस लेते रहने की आवश्यकता होती है मगर सांस लेने के लिए शुद्ध हवा उसी वक्त मिलेगी जब पेड़-पौधे अपना काम करें और पेड़-पौधे अपने काम के लिए सूरज के मोहताज हैं और सूरज को अपने वजूद के लिए अपने दूसरे नक्षत्रों की आवश्यकता है।

पता चला कि हर चीज़ अपने वजूद और अपने काम को पूरा करने में दूसरे की मोहताज है। इस तरह मालूम हुआ कि भोजन के पचाने में आसमान के सितारों का भी योगदान है।

हर चीज़ की ख़बर

खाने पर विचार करें कि किस तरह एक ही मिट्टी और एक ही पानी से तरह-तरह के रंग बिरंगे फल और फूल निकलते है।

यह एक ऐसे मालिक की कारीगरी है जो हर चीज़ से बाख़बर है, एक ही बीज से पूरी हिक्मत से तरह-तरह की चीज़ों को निकालता है, फिर खाने से ही किस तरह गोश्त-पोस्त, खून, हड्डी, चर्बी, दूध, बाल और खाल, उंगलियाँ, नाखून और बहुत सी चीज़ों को वजूद में लाता है ।

इसी प्रकार देखिए कि किस तरह एक ही खाना खा कर इन्सान के मुँह से थूक, नाक से गन्दगी, आंखों से आँसू, कानों से उसका मैल और ऐसी ही तमाम चीजें निकलती हैं, एक ही खाने से अलग-अलग अंगो से अलग-अलग चीज़े निकलती हैं।

यह तमाम बातें अल्लाह तआ़ला की कारीगरी को साबित करती हैं। अगर कोई चीज़ दूसरे भाग से निकलने लगे जैसे नाक से थूक निकल जाए या मुँह से गन्दगी, आँख से कान का मैल और कान से आँसू निकलने लगें, तो फिर सोचिए क्या हाल होगा?

आखिर इन कामों की हद बन्दी किस ने तय किया? क्या उस के अलावा

और कोई हो सकता है जिसने यह इन्तिज़ामात किये? जिस नुत्फे (वीर्य) से इन्सान को पैदा किया गया, उसको उसी ऊपर वाले ने विभिन्न अंग दिये, जो इन्सान के लिए मददगार साबित होते हैं।

समुद्र की मछलियाँ

समुद्र की मछलियों को भी चूंकि ज़िन्दा रहने के लिए ऑक्सीजन की ज़रूरत है, इस लिए उसी सर्वज्ञ और दयावान ज़ात ने मछली को पानी में मौजूद ऑक्सीजन को ह़ासिल करने के लिए ख़ास तरह़ से तैयार किया, जिस से कि वह इस काम को आसानी से अन्जाम दे सके। इस तरह सृष्टि की हर चीज़ पर विचार करने से सृष्टा की कुद्रत का अन्दाज़ा होता है।

चट्टानों में चीटियों के अण्डे

जंगलों में किसी भारी पत्थर को उलट कर देखिए तो उसके नीचे कहीं-कहीं चीटियों के ढ़ेर नज़र आएँगे, उनमें कुछ चीटियाँ अण्डों से निकल रही होंगी, इन पहाड़ों की अंधेरी चट्टानों में चीटियों का अण्डे से पैदा होना और समुद्र में मछली के अण्डे से मछली का निकलना, ऊपर वाले के गुण की स्पष्ट गवाही है।

इससे साफ मालूम होता है कि समुद्र की गहराइयाँ हों या नक्षत्रों का चमकना, अल्लाह के ज्ञान से बाहर नहीं। हर जगह उसी की कारीगरी है। हम देख सकते हैं कि चींटी के अण्डे से चींटी पैदा हो रही है न कि मच्छर, ऊँटनी के पेट से ऊँट पैदा हो रहा है न कि गधा। आम के पेड़ से आम लग रहा है न कि अमरूद।

मीठा और नमकीन पानी

आप ने सोचा कि समुद्रों में अल्लाह ने नमक क्यों रखा? उनकी मौजों में उतार चढ़ाव और हरकत क्यों रखी? इस लिए कि मीठा पानी अगर एक जगह रुका रहे तो उसके अन्दर सड़ान पैदा जाएगी और अल्लाह तआ़ला जानता था कि इस तरह इस सड़ान से ज़मीन पर बसने वालों का जीना दूभर हो जाएगा। शायद इसीलिए उसने इन्तिज़ामात ऐसे किये कि समुद्रों को जारी रखा और उन्हें नमकीन बना दिया।

इस प्रकार ब्रहमण्ड की हर वस्तु गवाही देती है कि सृष्टि का सृष्टा अपनी सृष्टि के सम्बन्ध में पूरा ज्ञान रखता है।

क्या परमेश्वर हमारे कामों में दिलूचस्पी ले रहा है? यक़ीनन ले रहा है, खेत में खरबूज़े की नन्ही सी बेल ज़मीन से निकलती है फिर उससे दो नाज़ुक से पत्ते निकलते हैं, उसकी जड़ बहुत कमज़ोर होती है। इसलिए दो भागों में बट कर चिमट जाता है। यह नन्हा सा पौधा उसी बीज से भोजन ले रहा है। जब दो चार दिन के बाद उसकी जड़ भोजन के योग्य हो जाती है तो यह बीज झड़ जाते है ऐसा क्यों और कौन कर रहा है।

बीज का ज्ञान

बीज जब मिट्टी चीर कर ज़मीन के अन्दर जा रहा था तो उसको किस ने अपनी जड़ों को नीचे भेज कर अपने तनों और पत्तों को ऊपर उठना सिखाया? क्या कभी किसी बीज को इसके खिलाफ़ करते देखा है?

क्या यह सब चीज़े एक अक़्लमन्द इन्सान के लिए इस बात का प्रमाण नहीं हैं कि यह सब कारीगरी उसी मालिक की है, जो पूरी सृष्टि को राह दिखाता है।

पौधों के पत्ते और तने

यह बताइए कि पौधों के पत्तों को तने पर या टहनियों पर फैलना और एक पत्ता एक तरफ निकल आए तो दूसरी ओर से दूसरे को निकलना किस ने सिखाया? चाँद, सूरज और सितारों को अपने क्षेत्र में राह कौन दिखाता है? दूर-दूर क्षेत्रों में निकल जाने वाले पक्षियों को कौन राह बताता है? पूरी दुनिया को राह दिखाने वाला उस ज़ात के अलावा और कोई हो सकता है जिसने यह इन्तिज़ामात किये हों।

इस तरह जिस इन्सान को इस बात का यक़ीन हो जाए कि अल्लाह तआ़ला ही हिक्मत के साथ उसकी रहनुमाई का इन्तिज़ाम करने वाला है तो फिर जो विचार ऊपर वाले की रहनुमाई के मुक़ाबिले पर हो वह किसी भी सूरत में हरगिज़ नहीं माना जा सकता।

परमेश्वर का चमत्कार

आज से कई वर्ष पहले एक वैज्ञानिक ने हमारे कुछ पढ़े लिखे लोगों का दिमाग़ चकरा दिया था और वह लोग कहा करते थे कि बादल अपनी कारीगरी से बिजलियाँ और बूँदें बरसा रहे हैं। फूल खुद-ब-खुद खिल रहे हैं, बहुत अच्छा, उन से पूछिए:

प्रश्न फूल कहाँ से उगा?

उत्तर ज़मीन से।

प्रश्न उसमें रंग और खूशबू कहाँ से आए?

उत्तर हवा, ज़मीन और सूरज से।

अगर तमाम फूल ज़मीन से पैदा हुए और यह हवा, रंग व खुशबू, ज़मीन और सूरज से प्राप्त हुई हैं तो फिर क्या कारण है कि गुलाब का रंग लाल, चमेली का सफेद और नरगिस का ज़र्द हो गया और उनकी खुशबू अलग अलग है?

एक ही ज़मीन और एक ही सूरज के प्रभाव से परिणाम अलग क्यों आ रहे हैं, ज़मीन से चमेली भी पैदा होती है और सुर्ख गुलाब भी, फिर चमेली के साथ गुलाब और गुलाब के पेड़ से चमेली के फूल क्यों नहीं निकलते?

आम के पेड़ से आम ही क्यों

ज़मीन में आम और सेब के बीज बोते है तो आम के बीज से सेब क्यों नही पैदा होता? बेजान बीज के कान में किस ने कह दिया कि देखो, तुम्हे आम का पेड़ ही बनना है। खबरदार! शीशम या शहतूत में तब्दील न होना।

आम की डाली तोड़ें और चखें तो रस कड़वा होगा, लेकिन उसी डाल का फल बेहद मीठा और खुशबूदार होगा। डालियों का कड़वा रस फल में पहुँच कर इतना स्वादिष्ट कैसे बन गया? यह सब अपने आप हुआ कितना जाहिलाना ख्याल है। यह घड़ों का पानी क्यों खुद-ब-खुद शहद नहीं बन जाता। यह गेंद क्यों सेब में परिवर्तित नहीं हो जाती। बैट बल्ले भी लकड़ी के होने के बावजूद उन से क्यों आम नहीं निकाल लेते।

अगर यह ज़मीन व सूरज और किरणें इतनी अक़्लमन्द हैं तो फिर लकड़ी

की बल्ली, जो थोड़ी सी ज़मीन में गड़ी है और जिस पर सूरज की किरणें भी हर रोज़ पड़ती हैं, क्यों जामुन या आड़ू उस में फल नहीं देते?

अन्तर क्यों

खुद आप के शरीर से पत्ते और फल क्यों नहीं फूटते? आप की किताबें क्यों नही हरी भरी हो जाती? आप देख रहे हैं कि चील, मुर्ग़, कबूतर और बुल्बुल की आवाज़ में क्यों अन्तर है।

यह क्या बात है कि हर कौआ कॉए-कॉए कर रहा है वह कबूतर की तरह न तो गुटर गू करता है और न मुर्ग की तरह बाँग देता है। यह असंख्य जीवों को सही बोली किस ने सिखाई? गधे को गधा और भेड़ को भेड़ किसने बनाया? सितारों के बावजूद रात के वक़्त ज़मीन पर अंधेरा कैसे छा जाता है? और ज़मीन से लाखों गुना बड़े सूरज को हर सुबह खींच कर पश्चिम से पूरब की ओर कौन निकालता है? बाप एक ही होता है परन्तु सगे भाइयों में अन्तर क्यों होता है।

सोचो कि अगर ऊपर वाला भूकम्प ले आए तो क्या अल्लाह के बिना कोई और ताक़त ऐसी है जो बचा सके? और यह भी कि अल्लाह दिन में अन्धेरा कर दे तो क्या कोई और ताक़त ऐसी है जो रात को दिन में बदल दे।

फलों के स्वाद अलग-अलग क्यों-

जब वीरान और बांझ ज़मीन पर वर्षा होती है तो उससे पेड-पौधे फूट निकलते हैं? फलों के स्वाद और खुशबू अलग-अलग किसने पैदा किये? क्या ज़मीन ने, आसमान ने, सूरज ने या अल्लाह (उपर वाले मालिक) ने?

इसी तरह पानी के स्रोत जारी किये जिसकी सिंचाई से लोग ऐसे फल खाते हैं जो उनके हाथों ने नहीं जमीन से निकले बल्कि यह ऊपर वाले के दिये हुए होते हैं।

हवा का सन्तुलन

जिस हवा में हम सांस ले रहे हैं, उस पर ग़ौर कीजिए तो अन्दाज़ा होगा कि अच्छी हवा (आक्सीजन) अपने अन्दर दाखिल करके फिर उसे गंदी हवा

(कार्बन डाई आक्साइड) में बदल देते हैं। ज़ाहिर है कि कितनी मात्रा में तमाम इन्सान आक्सीजन ले रहे हैं, फिर भी क्या अच्छी हवा (आक्सीजन) की मात्रा में कुछ भी कमी हो रही है? नहीं, इसलिए कि मालिक़ ने पेड़-पौधों को आक्सीज़न तैयार करने वाला बनाया है, जो मुनासिब मात्रा में कमी-बेशी हुए बिना हवा का सन्तुलन बनाये रखते हैं। इस उद्देश्य के लिए उसने पेड़-पौधों से जंगल भर दिये हैं। पेड़-पौधे आक्सीजन निकालते हैं और आप कार्बन डाईआक्साइड निकालते है अगर यह कार्बन हवाओं में जमा होता रहता, तो सारा वातावरण खराब हो जाता। उस ने कार्बन को पौधों की भोजन सामग्री बना दिया ताकि महौल जहरीला न हो और आप का जीवन सुखद बना रहे।

सूरज का तापमान

वनस्पति से पानी, मिट्टी और हवा से खाना तैयार करने वाले पौधों के ज़रिये ऊपर वाले ने अपने बन्दों के लिए रोज़ी का इन्तिजाम किया और जो भोजन इन्सान और हैवान की ज़रुरत थी, उस को अच्छी तरह तैयार करने के लिए ऊपर वाले ने पेड-पौधों के लिए सूरज को रखा और अगर अल्लाह मीठे पानी के स्रोत जारी न करे और खेती के लिए अच्छी मिट्टी न तैयार करे और खेती से भोजन को निकालने के लिए तापमान का सन्तुलन न रखे तो ज़रा सोचिए क्या होगा?

जब इन्सान या हैवान ऊपर वाले के दिये हुए भोजन को अपने गले से नीचे उतार लेता है और ऊपर वाले ने हज़म करने का जो तरीक़ा बनाया है उसी के अनुसार अच्छी तरह हज़म कर लेता है, तो फिर उस भोजन को पालनहार हर अंग तक पहुँचाता है चाहे दिमाग़ का अन्दरुनी भाग हो या खाल का ऊपरी भाग या हड्डियों के बीच का भाग हो, हर जगह ऊपर वाला उसको पहुँचाता है।

बादलों का इन्तिज़ाम-

सर पर बादलों को हांक कर लाता है, लेकिन उन्हें सैलाब (बाढ़) बना कर नहीं बरसाता और अगर सैलाब बना कर बरसा देता तो फसलें और नस्लें तबाह हो जातीं।

उसी रक्षा करने वाले ने हवा के एक ऐसे परदे (ग़िलाफ) से ज़मीन का घेराव

किया जो सूरज और दूसरे नक्षत्रों की दिशा से आने वाली क़ातिलाना किरणों को रोकता है। उसी ने तीरों की तरह गिरने वाले तारों और शोलों की तबाही से बचाने के लिए हवा के ग़िलाफ (ओज़ोन) को मज़बूत कवच बनाया, हमारे पैरों के नीचे से ज़मीन को खिसकने से बचाने के लिए मज़बूत पहाड़ों को ज़मीन पर जमा दिया।

क्या इस पर भी हम अपने मालिक का शुक्र नहीं अदा करेंगे कि उसने अन्दर, बाहर, ऊपर, नीचे से हमारी सुरक्षा का कैसा शानदार इन्तिज़ाम किया।

इस तरह जिस को यक़ीन हो जाए कि ऊपर वाला (अल्लाह) ही उसकी सुरक्षा करने वाला है, तो फिर ज़मीन व आसमान की कोई ताक़त उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। हाँ, जितनी मात्रा में अल्लाह ने उसका नुक़्सान तय फरमाया है वह हो कर रहेगा।

ज़मीन से पानी

मालिक ने पानी का एक समुद्र ज़मीन की तहों में बहा दिया, जिससे इन्सान कुछ फ़िट गढ़ा खोदता है और जितना चाहे पानी निकाल लेता है इसी प्रकार उस ऊपर वाले ने सूरज की किरणों के माध्यम से समुद्र का लाखों टन पानी हवा के कन्धों पर लादकर उठा देता है, जो पानी में तब्दील होकर खेतों को सैराब करता है।

धरती से अनाज

खेत में ख़रबूजे की नन्ही सी बेल ज़मीन से निकलती है और उस के दो नाज़ुक से पत्ते होते हैं, उस की जड़ इतनी कमज़ोर होती है कि अभी ज़मीन से ग़िज़ा ह़ासिल नहीं कर सकती। उस के पत्तों के साथ उस का बीज दो ह़िस्सों में बँट कर चिमटा हुआ है। यह नन्हा सा पौधा इसी बीज से ग़िज़ा ले रहा है। जब दो चार रोज़ के बाद उस की जड़ ग़िज़ा लेने के क़ाबिल हो जाएगी तो यह बीज सड़ जाएँगे, यह सब किसने किया?

माँ के पेट में इन्सान के लिए न ग़ल्ला मौजूद था, न दूध और न ही फल, अल्लाह ने एक पाइप के ज़रिये उसे नौ माह तक ग़िज़ा पहुँचाई, फिर बाहर आया तो बहुत कमज़ोर व नाज़ुक था, हाज़मा बिल्कुल कमज़ोर था, वह रोटी खाने के क़ाबिल न था। ऊपर वाले ने उस की माँ की छातियों में साफ़ सुथरा दूध का स्रोत

जारी कर दिया। जब दो बरस के बाद दाँत निकल आये तो यह स्रोत सूख गये और ऊपर वाले ने उसे कहा कि जाओ और ज़मीन से अब ग़िज़ा तलाश करो। उस के बाद ऊपर वाले और इन्सान में इस प्रकार वार्तालाप की कल्पना की जाती है। **जैसे–**

इन्सानः ऊपर वाले मालिक! मैं ज़मीन के पेट से कैसे ग़िज़ा ह़ासिल करुँ?

परमेश्वरः यह लो चन्द दाने, ज़मीन में बिखेर दो। हमारी ज़मीन ख़ुद ब ख़ुद उसे पौधा की शक्ल में बदल देगी।

इन्सानः लेकिन अगर मैंने गेहूँ बोया और जौ उग आया तो फिर?

परमेश्वरः यह कभी नहीं हो सकता। पहली बात तो इसलिए कि ब्राह्माण्ड की हर चीज़ हमारे हुक्म को पूरा करती है और दूसरे इसलिए कि हर कार्य की हर दशा में हम संरक्षता करते हैं। यह असम्भव है कि गेहूँ से जौ पैदा हो और अंगूरे से अनार। जब तक हम न चाहें हम इस पर भी सामर्थ्य रखते हैं परन्तु ऐसा नहीं करते।

इन्सानः लेकिन इतने बड़े खेत को सींचने के लिए मैं पानी कहाँ से लाऊँगा?

परमेश्वरः पानी का एक समुद्र ज़मीन के नीचे बह रहा है। चन्द मीटर गड्ढ़ा खोदो और जितना जी चाहे पानी निकाल लो और अगर गड्ढ़ा खोदने की ह़िम्मत न हो तो कोई हर्ज नहीं, हम सूरज के तापमान को समुद्र पर डालेंगे और लाखों टन पानी हवा के कंधों पर लाद देंगे। हवा इस बोझ को लेकर चल देगी। जो घटाओं में तब्दील हो जाएगा और घटाएँ तुम्हारे खेत पर बरस जाएँगी।

इन्सानः आप कितने अच्छे पालनहार (रब) हैं, ऐ मेरे पालनहार! मुझे यक़ीन दिलाइये कि आप की मुह़ब्बत व दया का स्रोत मुझ पर रहेगा वरना मैं तो इस अनोखी दुनिया में आप की रहनुमाई के बग़ैर एक क़दम भी न चल सकूँगा।

परमेश्वरः हम तुम्हारी इस इच्छा को पूरा करेंगे और हम तुम्हारे दिल की मशीनरी को चलाते रहेंगे। हम तुम्हें देखने, सुनने और दिल व दिमाग़ की ताक़त और गुर्दे के ज़रिये ख़ून छानने की योग्यता प्रदान करेंगे, और

उसे हम हड्डियों के बीच सुरक्षित रखेंगे।

इन्सानः मेरे मालिक मैं तेरे सामने अपने मस्तिष्क को नमन करता हूँ। अ़क़ीदत व मुहब्बत के साथ और तुझ पर ही आस्था रखता हूँ।

परमेश्वरः साँस के लेने का काम बहुत पेचीदा है। इस निज़ाम को हम अपनी बेपनाह हिक्मत व दानिश से चलाएँगे। तुम्हें ज़िन्दा रहने के लिए आक्सीजन की ज़रुरत है, जिसे हम मुहैय्या करेंगे। इस मक़्सद के लिए हम ने वनस्पति व पेड़ पौधों से जंगल भर दिये हैं, जो आक्सीजन निकालते हैं और तू कार्बन निकालता है। अगर यह कार्बन वातावरण में जमा होती रहती तो सारा माहौल ख़राब हो जाता। हम ने कार्बन पौधों की ग़िज़ा बना डाली ताकि तेरा जीवन आसान हो।

इन्सानः ऐ मालिक! तू बहुत महान और बड़ा कृपालु है।

परमेश्वरः हम ने तुम्हारे शरीर में ख़ास तारों का एक जाल बिछा दिया है जिस का केन्द्र बिन्दु दिमाग़ है, ज्यो ही कोई कीड़ा मकोड़ा, बिच्छू वगैरह जिस्म के किसी हिस्से पर चढ़ आएगा फ़ौरन उन तारों के ज़रिये दिमाग़ को सूचना पहुँचेगी और दिमाग़ तुरन्त तुम्हारे हाथों को पकड़ने का हुक्म दे देगा। जब शारीरिक थकान आ जाएगी तो हम नींद की राहत में तुम्हें सुला देंग। जब तुम्हारे शरीर में ग़न्दगी जमा हो जाएगी तो हम पसीने, नाक व गुर्दो के रास्ते से उन्हें बाहर फेंक देंगे। अगर ग़न्दगी ज़्यादह हुई तो हम तुम्हारे शरीर में हरारत पैदा कर के उसे जला देंगे।

इन्सानः निःसन्देह ऐ परवरदिगार! तू ही मेरा और सारे संसार का सृष्टा है। मैं केवल तेरा ही गुण्गाान करुँगा और तेरे सिवा किसी को तेरे समकक्ष नहीं स्वीकार करुँगा तू मुझे सत्मार्ग प्रदर्शित करवा यही मेरी प्रार्थना है।

परमेश्वरः तुम्हारे शरीर में एक चीज़ दिल भी है जो तमाम जज़्बात का स्रोत है। मुहब्बत, भाईचारा, हमदर्दी और बहुत से गुण हम तुम्हें ज़िन्दगी की बुलन्दी की तरफ़ बुलाते रहेंगे। अगर तुम ने हमारी बात सुनी और हमारे इशारों को समझा तो जब तुम हमारे पास मरने के बाद पहुँच आओगे। हम तुम से अपने दिये हुए उपकारों के बारे में पूछेंगे कि उन्हें तुम ने कैसे प्रयोग किया उसी के अनुसार फिर हम तुम्हारे स्वर्ग या नर्क का

फ़ैसला करेगे।

इन्सानः ऐ पालनहार! तू सरापा रहमत (दया) का स्रोत है। तेरे उपकारों का कोई किनारा नहीं। ऐ चाँद व सूरज के मालिक! मैं तेरी इस बन्दा परवरी को कैसे भूल सकता हूँ कि तू इतना महान होने के बावजूद मुझ जैसे एक हक़ीर कीड़े पर मेहरबान है और मेरा जीवन चला रहा है।

ऐ मेरे परमेश्वरः इस विस्तार से यह हक़ीक़त सामने आ गई कि तू ही हमारा पालनहार है, हम तेरे सिवा कुछ नहीं कर सकते हम तुझ पर आस्था रखते हैं और तुझ से विनम्र प्रार्थना करते हैं कि तू हम पर दया कर और हमारे लिए सन्मार्ग प्रदर्शित करवा यह तेरी हम पर महान कृपा होगी (ऐ मालिक।)

ज़ालिम को सज़ा

अब सवाल यह पैदा होता है कि जब वह हमारे तमाम कामों को देख रहा है, हमारे ज़ाती कामों में गहरी दिलचस्पी ले रहा है तो क्या वह हमारे अच्छे और बुरे काम पर बदला भी देगा या नहीं।

अ़क़्ल के नज़्दीक यह बात नाक़ाबिले तस्लीम है कि वह मज़लूमों पर सितमगरों के जुल्म को देखता रहे और खामोश रहे। कोई अच्छा बादशाह भी अपनी रिआ़या पर जुल्म व सितम को बर्दाश्त नहीं कर सकता, तो फिर वह कैसे देख सकता है।

एक चोर किसी बेसहारा बेवा का सब कुछ लूट कर रफू चक्कर हो जाए। या कोई ज़ालिम थानेदार किसी शरीफ इन्सान को इसलिए किसी मुक़दमे में जकड़ दे, ताकि उसकी दौलत को हथिया सके या कोई अफ़्सर किसी मेहनती और ग़रीब नौकर पर केवल इस लिए छुरा चला दे कि वह उसकी इच्छापूर्ति नहीं कर सका। तो क्या उसे हुकूमत सज़ा नही देगी जब यह मामूली बादशाह सज़ा दे सकता है तो वह जो सारी सृष्टि का सहनशाह है वह क्यो नही देगा! वह अवश्य ही ज़ालिमों को सजा और मज़लूमों को उसका बदला देगा इसलिए इन्सान को उसके इच्छानुसार जीवनयापन करना चाहिए।

नज़र न आने वाली चीज़ो का इन्कार

ऊपर वाले उन कोशिकाओं के सम्बन्ध में क्या कहेंगे जो खानों में बिगाड़ और खराबी पैदा कर देती है? यक़ीनन वह ऊपर वाले की तरफ से पैदा किये हुए हैं, और पिछले कोशिकाओं से उनका वजूद नहीं हुआ, लेकिन कई वर्ष पूर्व इस सन्देह की भी उस वक़्त क़लई खुल गई जब रिसर्च करने वालों ने खाना को खराब होने से बचा कर उस के सुरक्षित करने का तरीक़ा निकाला, इस तौर पर कि खाने को ऐसे मज़बूत डिब्बों में अलग रखा, जिसमें कोशिकायें खुद मर जायें।

जब निगाहें अपनी कमज़ोरी की वजह से अपने से बाद वाली चीज़ों को देखने से बेबस हो गई तो फिर समझना चाहिए कि उन चीज़ों को वजूद में लाने वाले मालिक के मौजूद होने को अक़्ल कैसे नहीं तस्लीम करेगी।

इन्सानी निगाह तो इतनी कमज़ोर है कि सितारे, जिसे इन्सान पूरी तरह नहीं देख सकते और सितारों का सही अन्दाज़ा नहीं कर सकते तो फिर जो उनका भी मालिक है, उसका कैसे अन्दाज़ा और नज़ारा कर सकते है! जबकि इंसानी निगाह इस दुनिया में सूरज को सीधे देखने की क्षमता नहीं रखती तो अल्लाह को देखने की क्षमता कैसे रख सकती है?

भरोसा

जिस प्रकार लोग डाक्टरों, अनुभवी लोगों और उस्तादों का कहना मानते हैं, यह लोग अपने तजुर्बे से बातें बतलाते हैं, उनका कहना केवल इसलिए माना जाता है कि बताने वाले सुनने वालों के लिए भरोसे के क़ाबिल हैं उसी प्रकार अगर लोग घमण्ड छोड़ दें तो उन्हें अल्लाह तआ़ला का यकीन उनके ईशदूतों के रास्ते से हासिल हो जाएगा इस लिए कि वह परमेश्वर की ओर से निशानियाँ लेकर आए और दुनिया वालों के सामने पेश किया, जो परवरदिगार की बतलाई हुई बातों के सम्बन्ध में ज़मीन पर सबसे ज़्यादा भरोसेमन्द हैं।

ज़रूरतों को पूरी करने की शर्त लगाना

बहुत से लोग ऐसे हैं जो ऊपर वाले को मानने के लिए अपनी तरफ़ से

यह शर्त रखते हैं कि उनकी बताई हुई चीज़ों को परमेश्वर पूरा कर दे तो वह उसे मान लें जैसे- कोई कहे कि अगर ऊपर वाला चाहता तो मैं उसको मान लेता, अगर ऊपर वाला आस्था का रास्ता यही क़रार देता कि वह लोगों की माँगों और बताई हुई चीज़ों को पूरा करता रहे और उसका यही काम रहे, तो फिर जो लोग अल्लाह को मानने के लिए शर्तें लगाते हैं वह कहते कि अल्लाह रात को दिन बना कर दिखाए, सूरज को चाँद, ज़मीन को आसमान और मर्द को औरत की शक्ल में तब्दील कर दे इसी प्रकार दूसरे लोग दूसरी शर्तें लगाते रहते, कोई कहता कि फलाँ आदमी अगर मारा जाए तो मैं मान लूँगा कोई और शर्त लगाता। इस तरह हर एक शर्तें लगाता रहता, और धीरे-धीरे ज़मीन व आसमान ख़त्म हो जाता।

ऊपर वाले ने अपनी सृष्टि में ऐसे प्रमाण रखे हैं जो किसी भी व्यक्ति को अपने मालिक पर आस्था रखने के लिए काफी हैं, उसने हमें सुनने, देखने की ताकत दी और दिल बनाया जिस से उस का वजूद प्रमाणित होता है।

अ़क़्ल व तसव्वुर-

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अ़क़्ल दी है जिससे वह वास्तविकता को समझ सकता है, सत्य व असत्य और अपने लाभ व हानि की चीज़ों में अन्तर कर सकता है और आदेशों को पूरा करने के अ़क़्ल को श्रेष्ठ बनाया, जो अक़्ल की नेअ़मत से महरूम है उन की समाज में कोई गिनूती नहीं होती और उनसे कोई पूछताछ भी नहीं होती।

अल्लाह ही ने अ़क़्ल को बहुत सी कुव्वतें दीं जिस से वह चीज़ों का तसव्वुर करता है, उसी से इन्सानी कामों को अन्जाम देता है और अपने कामों में मदद लेता है, लेकिन कल्पना की ताक़त बहुत कमज़ोर और थोड़ी होती है। जैसे किसी के सामने किसी शहर का ह़ाल बयान किया जाए तो वह समझता है कि उस शहर में कुछ चीज़े होंगी, फिर उन चीज़ों को अपनी कल्पना की हुई शक्ल से बिल्कुल भिन्न पाता है।

कल्पना की ताकत

जब कोई व्यक्ति आपके घर का दरवाज़ा खट्खटाता है तो आप अन्दाज़ा

लगा सकते हैं कि कोई खट्खटा रहा है, लेकिन इस बात का अन्दाज़ा लगाना कि आने वाला व्यक्ति वास्तव में है कौन, उसकी लम्बाई चौड़ाई क्या है, उसका रंग कैसा है, उस का वजन कितना है? इन बातों का अन्दाज़ा लगाना आप के लिए मुश्किल है।

अ़क़्ल की ताक़त ने तो इतना किया कि दरवाज़े की आड़ से अन्दाज़ा लगाया कि बाहर कोई है जो दरवाज़ा खट्खटा रहा है, लेकिन कल्पना की ताक़त बेबस हो गई और दरवाज़े की आड़ ने उसको बाहर जाने से रोक दिया, बिल्कुल इसी तरह़ अ़क़्ल तो अल्लाह तआ़ला को स्वीकार कर लेती है लेकिन कल्पना की ताक़त अल्लाह के विषय में कल्पना करने से बेबस होती है। परन्तु एक स्वस्थ इन्सान अपने पैदा करने वाले को स्वीकार अवश्य कर लेता है। स्वीकार का अर्थ होता है उसके आदेशों का पालन और आदेशों का पालन ही इस बात का प्रमाण है कि उसने पूरे तौर पर अपने मालिक को स्वीकार करके उस का फरमाँबरदार बन गया है। जैसे कोई अपने किसी प्रकार के मालिक को स्वीकार कर ले तो उस का अर्थ होता है कि अब उसका अनुसरण करेगा।

ऊपर वाले (अल्लाह) के गुण-

सृष्टि और अपने इर्द-गिर्द की हर चीज़ पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि हर कण इस बात पर गवाह है कि उन को वजूद देने वाला खुदा इन गुणों का मालिक है।

1. वही सब का पैदा करने वाला है।
2. वही हमेशा से ज़िन्दा है।
3. वही हमेशा रहेगा।
4. वही हर चीज़ का ज्ञान रखता है।
5. वही हर चीज़ की ह़िक्मत से वाक़िफ है (हकीम है)
6. वही हर चीज़ की खबर रखता है।
7. वही हर एक को रोज़ी पहुँचाता है।
8. वही हर एक को उसके अनुसार राह दिखाता है।
9. वही हर एक की सुरक्षा करता है।
10. वही हर एक की शक्ल बनाता है।
11. वही दया करने वाला है।

12. वही सब से बड़ा ताक़तवर है।
13. वही हर चीज़ पर कुद्रत (सामर्थ्य) रखता है।
14. हर चीज़ पर उसी का कब्जा और उसी की हुकूमत है।
15. वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं।

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड का हर कण उस मालिक की गवाही देता है, ठीक उसी प्रकार पूरे ब्रह्माण्ड के विषय में एक इन्सान का ए़लान और उसकी गवाही भी यही है कि वह पूरे यक़ीन और विश्वास के साथ अपनी ज़बान पर यह शब्द लाता है कि "मैं गवाही देता हूँ कि वही अकेला अल्लाह इ़बादत का अधिकारी है"। जिसे अ़रबी में इस प्रकार कहते हैं **"अश्हदुअल्लाइलाहा इल्लल्लाहु"**।

अब इ़बादत कैसे की जाए और जीवन कैसे व्यतीत किया जाये जो ऊपर वाले की इच्छानुसार हो और वह जीवन के हर मोड़ पर रहनुमाई भी करता हो। इसमें हमें बहुत से महापुरुष मिलते हैं परन्तु जीवन के हर क्षेत्र में सामाजिक हो, आर्थिक हो, व्यवसायिक हो, राजनीतिक हो या ग्रहस्तिक जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, हर क्षेत्र में पूर्ण रूपेण अ़मली रहनुमाई जो मिलती है उस का बताने वाला कोई विशेष ईमानदार इन्सान होना चाहिए, उसी का नाम मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) है, जो पूरी सृष्टि में सब से अधिक ईमानदार हैं, जिन्होंने पवित्र कुर्आन अर्थात ईश्वरीय वाणी को पूरी मानव जाति के लिए उपहार के रूप में पेश किया, जिसमें मानव जीवन के उद्देश्य का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है और बताया गया है कि यदि ऊपर वाले के आदेशों का पालन न किया, तो उसे दुनिया में भी सज़ा मिलेगी और मरने के बाद नर्क में डाला जाएगा और यदि अपने कर्मों को ऊपर वाले मालिक के आदेशों के अनुसार अनुपालन करेगा तो उसे दुनिया में सुख व शान्ति मिलेगी और मरने के बाद स्वर्ग में उस का अच्छा स्थान होगा।

अल्लाह (परमेश्वर) से दुआ़ है कि वह हम सब मानव जाति को अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला सत्य मार्ग प्रदर्शित करवा कर लोक परलोक की शान्ति अ़ता फ़रमाए।

आपका शुभचिन्तक

मुह़म्मद सरवर नदवी
05-02-2009